ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.2, JULY-DEC,2023 /89

''अयोध्या के जातीय मंदिरों का सामाजिक योगदान''

शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय एवं प्रो0 हेमन्त कुमार सिंह
शोध छात्र–समाजशास्त्र एवं शोध निर्देशक – प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
जवाहर लाल नेहरू स्मा0पी0जी0 कालेज, बाराबंकी।
https://doi.org/10.61410/had.v18i2.150

शोध सारांश

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में धर्म एवं मंदिरों को सामाजिक अनुशासन एंव सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप में देखा गया है। वैसे तो अयोध्या का परिचय ही भगवान श्री राम की जन्म स्थली के साथ–साथ राममंदिर के रूप में है। जहाँ मंदिर और मस्जिद का विवाद विगत पाँच सौ वर्षों से कई पीढ़ियों ने देखा है, वैदिक काल से चली आ रही पूजा–पाठ एवं धर्म के प्रति आस्था में कहीं न कहीं जातिगत धारणा का भी समावेश रहा है। कुछ जातियों या वर्णों को ही मंदिर में प्रवेश की इजाजत थीं, वहीं कुछ निम्न जातियों को मंदिरों में प्रवेश से वंचित रखा गया था, अयोध्या जनपद में जातीय मंदिरों के निर्माण के पीछे जातीय टकराव से बचना तथा वर्ण व्यवस्था पर आधारित धार्मिक निर्योग्यताओं को समाप्त करने के साथ–साथ सामाजिक योगदान भी एक स्पष्ट लक्ष्य के रूप में देखा जा सकता है।

शब्द संकेत :– टकराव, निर्योग्यता, अलौकिक शक्ति, सामाजिक उत्तरदायित्व, संरक्षण, चुनौतियाँ, परिदृश्य, श्रद्वालु, मूल्य, निवर्हन, पूजा–स्थल

शोध–पत्र

भारत के सामाजिक सांस्कृतिक इतिहास में मंदिरों का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। इस धरा पर जब से मनुष्य भय एवं डर का अनुभव करने लगा, तभी से धर्म एवं मंदिरों में अलौकिक शक्ति की स्थापना का इतिहास माना जा सकता है। धर्म आध्यात्मिक या अलौलिक शक्ति के विश्वास के रूप में अपनी मान्यता रखता है। प्राचीनकाल से ही मंदिरों में लोग पूजा–अर्चना के साथ–साथ पूण्य एवं पाप में विश्वास हेतु मंदिर किसी भी व्यक्ति के मन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। धर्म एवं मंदिर व्यक्ति की आशा, आकांक्षा की पूर्ति के प्रतीक रूप में भी देखे जाते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि मंदिर हमेशा से व्यक्ति के कठिन समय में शरण स्थल के रूप में भी अपनी भूमिका का निर्वहन करते रहे है। मध्यकाल में मंदिरों का विस्तार बड़े पैमाने पर भारतीय धर्म एवं संस्कृति के रूप में इस देश में देखा जा सकता है।

उत्तर भारतीय क्षेत्र में मंदिरों का उद्भव मध्य युग में तीव्र गति से देखा जा सकता है। उत्तर प्रदेश में भी दक्षिण भारत के समकालीन ही मंदिरों का उद्भव दिखाई पड़ता है। अयोध्या एक अत्यन्त प्राचीन नगर के रूप में स्थापित है।[1] जनपद अयोध्या के मंदिरों ने भारतीय जनमानस में सामाजिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निवर्हन किया है। अयोध्या के मंदिर न केवल पूजा स्थल के रूप बल्कि एक शक्तिशाली सामाजिक इकाई के रूप में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते है। भारतीय संस्कृति के केन्द्र के रूप में भी अयोध्या के मंदिरों में पाये गये विभिन्न स्रोत सामाजिक संरचना, यहाँ के शासकों एवं उनके अधीनस्थों द्वारा संरक्षण हेतु किये गये प्रयासों को सामाजिक दृष्टिकोण से विश्लेषित किया जा सकता है।

पुराणें में भी अयोध्या के नाम का उल्लेख प्राप्त होता है। पुराणों में सप्त पुरियों में अयोध्या का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है।[2] अयोध्या पूरी दूनिया में सामाजिक साँस्कृतिक गतिविधि के केन्द्र के रूप में अपना स्थान रखता है। अयोध्या में भगवान राम के जन्म स्थल के साथ ही हजारों अन्य मंदिर भी है जिनमे हनुमानगढ़ी, कनकभवन तथा जैनधर्म के विभिन्न प्रर्वतकों का भी जन्म स्थल रहा है।

भगवान गौतम बुद्ध ने अयोध्या में प्रवास किया था। अयोध्या में विभिन्न जातियों के मंदिर भी बड़ी संख्या में अपना महत्व रखते हैं। सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधि के केन्द्र के रूप में अयोध्या के जातीय मंदिरों का अध्ययन अपने अनुसंधान के महत्व को सार्थक करता है। इस शोध पत्र में विभिन्न जातीय मंदिरों के क्षेत्र तथा उसको सामाजिक गतिविधियाँ तथा उसके सामाजिक योगदान का गहन विश्लेषण किया गया है। जनपद अयोध्या की सामाजिक स्थिति बुनियादी तंत्र एवं विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के साक्ष्य आधारित अध्ययन अनुसंधान उपकरणों एवं तकनीकि के माध्यम से विश्लेषण का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन में सामाजिक गतिविधि एवं तत्कालीन सामाजिक प्रस्थिति का भी अवलोकन किया गया है।

अयोध्या के विभिन्न जातीय मंदिरों यथा–पटवा पंचायती मंदिर (रयगंज), रजक (धोबी) पंचायती मंदिर (रायगंज) रैदास मंदिर (हनुमान कुण्ड), निषाद वश पंचायती मंदिर (टेढीबाजार), पासी पंचायती मंदिर (कनीगंज), कोरी पंचायती मंदिर (जलवान पुरवा, रायगंज), यादव वंशीय पंचायती मंदिर (टेढ़ी बाजार), बेलदार मंदिर (कटरा), चित्रगुप्त मंदिर (कायस्य) (तुलसीनगर), तेली मंदिर (कटरा), हलवाई मंदिर (रामगंज), खटिक पंचायती मंदिर (टेढ़ीबाजर), (रामगंज),मुराव मंदिर (टेढ़ी बाजार), विश्वकर्ता (लोहार मंदिर) (स्वर्गद्वार), प्रजापति पंचायती मंदिर (स्वर्गद्वार), कुर्मी मंदिर (कनीगंज), कसौधन मंदिर आदि मंदिरों की सामुदायिक प्रतिवद्धता, इन मंदिरों का संरक्षण और अन्य मंदिरों के प्रति उनकी आर्थिक व्यावसायिक भागीदारी वर्तमान समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, इसका सामाजिक स्तर मंदिर की गतिविधियों पर सामाजिक भागीदारी और इन मंदिरों को समझने के लिए विभिन्न सामाजिक उत्तरदायित्व के अस्तित्व पर एक सम्पूर्ण आकृति स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। अयोध्या के जातीय मंदिरों के समकालीन समाज का केन्द्र रहा है।[3] सामाजिक गतिविधियों में बदलते परिदृश्य की चुनौतियों से निपटने के भी इस प्रकार का अनुभव किया गया कि तत्कालीन समय में मंदिर सामाजिक पर्यावरण को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी समझने का प्रयास किया गया है। हिन्दू मंदिर या जातीय मंदिर हमें अतीत के इतिहास के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता एवं तत्कालीन सामाजिक गतिविधियाँ हमें कहीं न कही वर्तमान पर विभन्न प्रकार के उत्तरदायित्व एवं उसके प्रभावों को समझने का अवसर प्रदान करती है। वर्तमान पीढ़ी के साथ–साथ उन सभी महानुभावों जो परम्पराओं को विलुप्त होने से बचाने एवं उनमें वृद्धि करने हेतु एकजुट थे, इस प्रकार न्याय प्रदान करने में उनकी बड़ी भूमिका हो सकती है।

जनपद अयोध्या के विभिन्न जातीय मंदिर जिन्हें पंचायती मंदिर के रूप में भी जाना जाता है की अपनी अलग भूमिका रही है। अयोध्या को एक धार्मिक केन्द्र स्थल के रूप में जाना जाता है, रामजन्म भूमि संघर्ष का एक लम्बा इतिहास रहा है। अयोध्या परिक्षेत्र के विभिन्न जनपदों के बड़े–बड़े राजा महाराजा, बड़े–बड़े व्यावसायिक घराने आदि अयोध्या में प्रतिनिधित्व प्राप्त करने हेतु अपनी–अपनी बड़ी उपलब्धि प्राप्त की थी। मध्ययुगीन परिवेश में पंचायतीय मंदिरों ने अपने परिसर एवं उसके आस–पास विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के साथ–साथ श्रद्धालुओं एवं आस–पास के जनमानस का विभिन्न प्रकार से सहायता हेतु भी कार्य किया था।[4] तत्कालीन परिवेश में पारम्परिक प्रथाओं एवं परम्पराओं के माध्यम से सामाजिक न्याय को भी बढ़ावा दिया था। इस प्रकार जातीय मंदिर न केवल जनमानस की सामाजिक आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। बल्कि उनके सामासिक एवं आध्यत्मिक उत्थान की भी पूर्ति की थी।

शोध अध्ययन का क्षेत्र –प्रस्तुत शोधपत्र में जनपद अयोध्या तथा उसके आस–पास के क्षेत्रों में स्थित जाति आधारित मंदिरों से सम्बन्धित लगभग 200 उत्तरदाताओं का चयन विभिन्न आयु, वर्ग एवं महिलाओं'–पुरूषों के साथ–साथ पुजारियों, भक्तों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध अध्ययन ''अयोध्या के जाति आधारित मंदिरों का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' के कुछ उद्देश्यों का निर्माण किया गया है जो निम्नवत् है :–

1. उन परिस्थितियों का अध्ययन करना जिनमें इस जाति आधारित मंदिरों का उद्भव एवं विकास हुआ है।
2. इस बात का अध्ययन करना है कि जिन मूल्यों को ध्यान में रखकर इन मंदिरों की स्थापना हुई थी, वह आज भी जीवित है या समय के साथ उन मूल्यों में परिवर्तन हो गया है।
3. आज की युवा पीढ़ी अपनी जाति से सम्बन्धित विशिष्ट मंदिरों के बारे में क्या विचार रखती है।
4. क्या आज भी ये समाज/जाति को एकजुट रखने में सहायक सिद्ध होते हैं ?
5. समय परिवर्तन के साथ इन मंदिरों की सामाजिक व्यवस्था में क्या परिवर्तन हुआ है ?
6. विगत वर्षो में (कोरोना जैसी आपदा में) इन मंदिरों ने अपनी जाति/समुदाय में लोगों या समाज के अन्य लोगों के हितों के लिए क्या कार्य किया ?
7. क्या इन मंदिरों को समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को स्वीकार करना चाहिए।

शोध अध्ययन की उपकल्पना –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित उपकल्पनाओं को परखने का प्रयास किया गया है –

1. जातीय मंदिरों का स्वयं की जातियों में सामाजिक नियंत्रण में महत्वपूर्ण योगदान है।
2. जातीय मंदिरों सामाजिक नियंत्रण के लिए एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में कार्य करते हैं।
3. जातीय मंदिर धार्मिक सामंजस्य बनाने में भी महत्वपूर्ण है।
4. जाति विशेष के युवाओं का अपने जातीय मंदिरों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है।
5. इन जातीय मंदिरों ने एक प्रकार से वर्ण–व्यवस्था के दुष्प्रभाव को कम करने का कार्य किया है।
6. इन जातीय मंदिरों में समाज के शोषित वर्गों को एक विशेष सामाजिक पहचान दिलाने का कार्य किया है।
7. समय के साथ इन मंदिरों ने अपनी परमपराओं को बनाये रखा है।

उपर्युक्त सन्दर्भों में अयोध्या के जातीय मंदिरों का सामाजिक योगदान भारतीय जनमानस पर किस प्रकार रहा है। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि ''क्या वर्तमान भौतिकवादी युग में धर्म एवं धार्मिक स्थलों के प्रति युवा जनमानस प्रभावित रहता है?'' निम्न सारणी के माध्यम से उत्तर जानने का प्रयास किया गया है।

सारणी सं0–01

क्रम सं0	धर्म एवं धार्मिक स्थलों के प्रति विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	130	65.00
2-	नहीं	45	22.50
3-	कह नहीं सकते	25	12.50
	योग	200	100.00

सारणी सं0–01 के अध्ययन में सम्मिलित अध्ययन क्षेत्र जनपद अयोध्या के सम्पूर्ण 200 उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि ''क्या वर्तमान भौतिकवादी युग में धर्म एवं

धार्मिक स्थलों के प्रति युवा जनमानस प्रभावित रहता है।'' के क्रम में सम्पूर्ण 200 उत्तरदाताओं में से कुल 130 (65.00प्रतिशत) उत्तरदाता यह मानते है कि हाँ आज का युवा उत्साही है इस आधुनिक युग में भी वह धर्म एवं धार्मिक स्थलों के प्रति अपनी भावना रखता है। जबकि 45 (22.50) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते है, जबकि मात्र 25(12.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं इस प्रश्न के संदर्भ में कुछ भी नहीं कह पाते हैं।

सारणी सं0–02

क्या आप मानते है कि धार्मिक सामंजस्य स्थापित करने में जातीय मंदिरों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है ?

क्रम सं0	धार्मिक सामंजस्य के प्रति विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	60	30.00
2-	नहीं	110	55.00
3-	कह नहीं सकते	30	15.00
	योग	**200**	**100.00**

सारणी सं0–02 के अध्ययन में सम्मिलित अध्ययन क्षेत्र जनपद अयोध्या के सम्पूर्ण 200 उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि ''क्या मानते है कि धार्मिक सामंजस्य स्थापित करने में जातीय मंदिरों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है।'' के क्रम में सम्पूर्ण 200 उत्तरदाताओं में से कुल 130 (65.00प्रतिशत) उत्तरदाता यह मानते है कि हाँ आज का युवा उत्साही है इस आधुनिक युग में भी वह 60 (30.000प्रतिशत) उत्तरदाता यह स्वीकार करते है कि हाँ धार्मिक सामंजस्य स्थापित करने में जातीय मंदिरों की भूमिका वास्तविक रूप में बड़ी महत्वपूर्ण है। जबकि कुल 110 (55.00 प्रतिशत) उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते है, एवं मात्र 30 (15.00प्रतिशत) उत्तरदाता इस प्रश्न के संदर्भ में कुछ भी नहीं बता सके।

सारणी सं0–03

क्या आप मानते है कि धार्मिक निर्योग्यताओं के कारण ही जातीय मंदिरों का उद्‌भव भारतीय समाज में स्थापित हुआ है ?

क्रम सं0	धार्मिक निर्योग्यताओं के प्रति विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	95	47.50
2-	नहीं	80	40.00
3-	कह नहीं सकते	25	12.50
	योग	200	100.00

सारणी सं0–03 के अध्ययन में सम्मिलित अध्ययन क्षेत्र जनपद अयोध्या के सम्पूर्ण 200 उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि ''क्या आप मानते है कि धार्मिक निर्योग्यताओं के कारण ही जातीय मंदिरों का उद्‌भव भारतीय समाज में स्थापित हुआ है। के क्रम में सम्पूर्ण 200 उत्तरदाताओं में से कुल 95 (47.50 प्रतिशत) उत्तरदाता स्वीकार करते है कि हाँ समाज में धार्मिक निर्योग्यताओं के कारण ही जातीय मंदिरों का भारतीय समाज में उद्‌भव दिखाई पड़ता है, जबकि कुल 80 (40.00 प्रतिशत) उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते है,एवं मात्र 25(12.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं इस प्रश्न के संदर्भ में कुछ भी नहीं कहा।(5)

निष्कर्ष –

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में धर्म एवं संस्कृति के प्रति बड़ा लगाव अवश्य था। गाँव एवं कस्बे में विभिन्न सामाजिक स्तर का विकास मंदिरों पर अवश्य ही आधारित रहा होगा, किन्तु तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था में धर्म या मंदिरों में वर्ण आधारित प्रवेश के कारण समाज के सबसे निम्नवर्गों में धर्म के प्रति आस्था अवश्य थी किन्तु मंदिरों में उनका प्रवेश वर्जित होने के कारण उनमें जाति आधारित मंदिरों के निर्माण के प्रति झुकाव अवश्य ही दृष्टिगत होता है, किन्तु जाति आधारित मंदिरों के कारण कहीं पर भी सामाजिक या जातिगत बैमनस्य तो नहीं दिखाई पड़ती है जो धार्मिक गतिशीलता को प्रकट करता है।

संदर्भ–सूची

1. वर्मा, ठाकुर प्रसाद एवं गुप्त स्वराज्य प्रकाश, अयोध्या का इतिहास एवं पुरातत्व, भारतीय इतिहास एवं संस्कृति परिषद नई दिल्ली, पृ0–01
2. साक्षी अयोध्या, विशेषांक, अंक 58, अयोध्या शोध संस्थान, पृ0–14
3. वही, पृ0–78
4- www.bhaskar.com 30-12-2023
5. साक्षात्कार के आधार पर।